Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

डॉ. प्रीती यादव*
पीपल्स कॉलेज नांदेड

शोध सार

इक्कीसवीं शताब्दी का वर्तमान काल मानव इतिहास में एक ऐसे निर्णायक मोड़ के रूप में स्थापित हो चुका है जहाँ तकनीक केवल सहायक साधन न रहकर मानव जीवन, चिंतन और रचनात्मकता को दिशा देने वाली शक्ति बन गई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस तकनीकी युग की सबसे प्रभावशाली उपलब्धि है, जिसने विज्ञान, उद्योग, चिकित्सा, प्रशासन और संचार के साथ-साथ अब साहित्य और मानविकी जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में भी गहरा हस्तक्षेप किया है। हिंदी साहित्य, जो भारतीय समाज की ऐतिहासिक चेतना, सांस्कृतिक स्मृति और मानवीय संवेदनाओं का प्रतिनिधि रहा है, आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ एक नए बौद्धिक संवाद के दौर में प्रवेश कर चुका है।

बीज शब्द: *हिंदी साहित्य, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, भाषा प्रौद्योगिकी, डिजिटल मानविकी, साहित्यिक सृजन*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. प्रीती यादव
Email: pritiyadav86970@gmail.com

प्रस्तावना:-

हिंदी साहित्य भारतीय सभ्यता और संस्कृति का वह जीवंत दस्तावेज है जिसमें समाज की चेतना, संघर्ष, मूल्यबोध और आकांक्षाएँ निरंतर अभिव्यक्त होती रही हैं। यह साहित्य केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने सामाजिक परिवर्तन, वैचारिक आंदोलनों और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी केंद्रीय भूमिका निभाई है। आदिकाल की वीरगाथाओं से लेकर भक्तिकाल की आध्यात्मिक चेतना, रीतिकाल की कलात्मकता और आधुनिक काल की सामाजिक यथार्थवादिता तक हिंदी साहित्य ने समय के साथ स्वयं को निरंतर रूपांतरित किया है। हिंदी साहित्य से आशय उस संपूर्ण साहित्यिक परंपरा से है जो हिंदी भाषा में रचित है और जिसमें कविता, कथा, नाटक, निबंध और आलोचना सम्मिलित हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह तकनीकी व्यवस्था है जो मानव मस्तिष्क की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अनुकरण करती है।

साहित्य का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि वह कभी स्थिर नहीं रहा। मुद्रण तकनीक के आगमन ने साहित्य को जनसुलभ बनाया, पत्रिकाओं ने साहित्यिक विमर्श को गति दी और डिजिटल माध्यमों ने साहित्य को वैश्विक मंच प्रदान किया। इसी ऐतिहासिक विकासक्रम में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक नवीन चरण के रूप में सामने आई है, जिसने साहित्य की पारंपरिक अवधारणाओं को चुनौती दी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा को समझने, उत्पन्न करने और विश्लेषण करने में सक्षम है। यह क्षमता साहित्य जैसे क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ और प्रश्न दोनों उत्पन्न करती है। हिंदी साहित्य, जो लंबे समय तक तकनीकी उपेक्षा का शिकार रहा, आज डिजिटल युग में नए अवसर प्राप्त कर रहा है। दुर्लभ पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण, ग्रंथों का संरक्षण और शोध के नए उपकरण हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।

हिंदी साहित्यिक सृजन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता:-

साहित्यिक सृजन मानव अनुभव की अभिव्यक्ति है। लेखक अपने जीवनानुभव, सामाजिक परिवेश और आंतरिक संवेदनाओं को शब्दों में रूपांतरित करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस प्रक्रिया को सांख्यिकीय पैटर्न के माध्यम से समझती है। मशीनें कविता और कहानी जैसी रचनाएँ उत्पन्न कर सकती हैं, किंतु उनमें आत्मानुभूति का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यह प्रश्न साहित्यिक विमर्श के केंद्र में है कि क्या भाषा की शुद्ध संरचना ही साहित्य है, या उसके पीछे की संवेदना भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। साहित्यिक सृजन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संगम वर्तमान समय की सबसे रोमांचक और बहस वाली घटनाओं में से एक है। कृत्रिम बुद्धिमता (AI) अब केवल गणना तक सीमित नहीं है बल्कि यह कविता, कहानी, निबंध और पटकथा लेखन

जैसी रचनात्मक विधाओं में भी सक्रिय हो रहा है। नए-नए विषयों और शैलियों का सृजन AI, ChatGPT, gemini आदि के माध्यम से ही हो रहा है। लेखक इन उपकरणों का उपयोग विषय विस्तार, समृद्ध शब्दावली तथा शैलीगत प्रयोगों के लिए कर रहे हैं, जिससे साहित्यिक सृजन में नवीनता और विविधता आ रही है। शिक्षण और प्रशिक्षण की प्रक्रिया में भी ए आई एक प्रभावी साधन के रूप में उभरा है जो छात्रों को रचनात्मक लेखन की तकनीकी सीखने और लेख की अभिव्यक्ति को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

अनुवाद, आलोचना और शोध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता:-

अनुवाद के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अभूतपूर्व प्रगति की है। हिंदी साहित्य अब अन्य भाषाओं में तीव्र गति से अनुदित हो रहा है। इससे हिंदी साहित्य का वैश्विक प्रसार संभव हुआ है। किंतु साहित्यिक अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक संदर्भों का पुनर्सृजन भी है, जिसे मशीनें अभी पूर्ण रूप से नहीं कर पाई हैं। मशीनी अनुवाद कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक हिस्सा है मशीन अनुवाद की सहायता से भाषाओं के बीच की दूरियां कम हो रही है यह मशीन अनुवाद निरंतर बेहतरीन हो रहा है क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव के व्यवहार कामकाज उसके भंडार फीडबैक आदि से सीखने तथा स्वयं को निरंतर निखारने में सक्षम है बालेंदु शर्मा लिखते हैं:- "कुछ वर्षों के भीतर हम ऐसे मशीनी अनुवाद की स्थिति में पहुंच सकते हैं जो मानवीय अनुवाद की ही टक्कर का होगा सबसे बड़ी बात यह है कि यह अत्यंत स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होगा। कंप्यूटर तथा मोबाइल के जरिए ही नहीं बल्कि दर्जनों किस्म के डिजिटल उपकरणों के जरिए जो हमारे घरों, दफ्तरों, विद्यालयों और यहां तक कि रास्तों और इमारतों में भी मौजूद होंगे।"

साहित्यिक आलोचना और शोध में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने नए उपकरण प्रदान किए हैं। बड़े साहित्यिक संग्रहों का विश्लेषण अब अधिक सुलभ हो गया है, किंतु आलोचना का मानवीय पक्ष अब भी अपरिहार्य है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से भाषा के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य यह हो सकता है कि अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों को विकसित किया जा सकता है। हमारा हिंदी साहित्य रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत गीता, वेद-पुराण, उपनिषद जैसे ग्रंथ आयुर्वेद योग जैसी ज्ञान संपदा आदि दुनिया भर में गैर हिंदी पाठको तक पहुंच सकती है। इससे कहीं अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है विश्व के ज्ञान, शोध, साहित्य का हिंदी भाषी लोगों तक पहुंचना। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व स्तरीय सामग्री की कमी है कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से ऐसी सामग्री हिंदी में तैयार की जा सकती है और मशीन अनुवाद के माध्यम से वैश्विक ज्ञान को हिंदी भाषा में ग्रहण किया जा सकता है। यह ज्ञान अंग्रेजी से भी आगे बढ़कर अन्य क्षेत्रों में पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी तथा दक्षिणी से भी प्राप्त किया जा सकेगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी भाषा के लिए नए रास्ते खोल सकती है और अस्तित्व को सुरक्षित रखने में योगदान दे सकती है। माइक्रोसॉफ्ट में भारतीय भाषाओं के प्रभारी श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच लिखते हैं:- " कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी के स्थाई भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा का खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह है कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियों को समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त है और कृत्रिम बुद्धि तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकी अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती है।"

डिजिटल प्लेटफॉर्म पाठकों की रुचि के अनुसार साहित्य सुझाते हैं, जिससे पाठक का अनुभव व्यक्तिगत हो जाता है। किंतु यह प्रवृत्ति साहित्यिक विविधता को सीमित भी कर सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता साहित्य को अधिक सुलभ बनाती है, परंतु यदि साहित्य को केवल तकनीकी वस्तु बना दिया गया तो उसकी मानवीय आत्मा को क्षति पहुँच सकती है।कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग लेखन, संगीत और यहाँ तक कि फ़िल्म स्क्रिप्ट लिखने में भी किया जा रहा है। यह रचनात्मक प्रक्रियाओं को तेज़ी से और अधिक कुशल बना सकता है। कृत्रिम बुद्धिमता आधारित टूल्स वीडियो और ऑडियो को स्वचालित रूप से सम्पादित कर सकते हैं, जिससे पोस्ट-प्रोडक्शन का समय कम हो जाता है। कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग लक्षित विज्ञापन देने के लिए किया जा रहा है। यह उपयोगकर्ता के व्यवहार और प्राथमिकताओं का विश्लेषण करता है और सबसे प्रासंगिक विज्ञापन दिखाता है। कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अवांछित या अनुचित सामग्री को पहचानने और हटाने के लिए किया जाता है। कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग गेम डेवलपमेंट के लिए भी किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमता आधारित वर्चुअल असिस्टेंट्स जैसे कि एलेक्सा, सिरी और गूगल असिस्टेंट मनोरंजन और मीडिया सामग्री को खोजने और प्ले करने में मदद करते हैं।

लेखकत्व, मौलिकता और बौद्धिक संपदा जैसे नैतिक प्रश्न कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ और अधिक जटिल हो गए हैं। यह आवश्यक है कि तकनीक का उपयोग साहित्यिक मूल्यों के अनुरूप हो।

निष्कर्ष:-

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संबंध विरोध का नहीं, बल्कि संवाद और सहअस्तित्व का है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य के संरक्षण, अध्ययन और प्रसार में सहायक सिद्ध हो सकती है, किंतु वह साहित्य की आत्मा का स्थान नहीं ले सकती। साहित्य मानवीय अनुभव और संवेदना की अभिव्यक्ति है, जिसे कोई भी मशीन पूर्णतः प्रतिस्थापित नहीं कर सकती।

भविष्य का हिंदी साहित्य वही होगा जो तकनीकी नवाचारों को अपनाते हुए भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों और मानवीय मूल्यों को बनाए रखे। इसी संतुलन में हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सार्थक और रचनात्मक भविष्य निहित है।

संदर्भ सूची :

1:- बालेन्दु शर्मा दाधीच, हिंदी विमर्श की मुख्य धारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता,साहित्य परिक्रमा, जुलाई 2023

2:- वही

3:- डॉ. प्रो. संतोष विजय कुमार येरावार, साहित्य कलश तथा व्यवहारिक हिंदी

4:- https://www.drishtiias.com